International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-07-2024, Accepted: 10-08-2024, Published: 26-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 37-38

रामचरित मानस और स्त्री विमर्ष

कृष्णा
हिंदी विभाग, शोधार्थी, श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा, राजस्थान, भारत

सारांश
मध्यकालीन साहित्य भारतीय समाज में रूढिवादिता और पुनर्जागरण काल का सीमान्त साहित्य है। इसमें कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, रैदास, रसखान आदि ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों का विरोध किया है। मध्यकालीन साहित्य में इन लोकनायकों ने बिना किसी भय के खुलकर समाज की रूढिवादिता का विरोध किया है। सामन्तषाही के समाज में तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना की तो कई धर्मगुरूओं ने उनका विरोध भी किया। तुलसीदास के मानस में स्त्री विमर्ष को लेकर कई विरोधाभास है और वह इसलिए है क्योंकि नारी विषयक जिन परिप्रेक्ष्यों को तुलसी ने छुआ है वह घटनाक्रम से जुडे है और विरोधियों ने उन बातों को प्रसंगवष ना समझ कर तुलसी के व्यक्तिगत विचारों के आधार पर समझने का प्रयास किया है। प्रस्तुत आलेख में तुलसीदास के रामचरित मानस में निहित इन्हीं नारी विमर्ष संबंधी परिप्रेक्ष्यों का विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्दः तुलसीदास, रामचरितमानस, स्त्री विमर्ष

तुलसीदास और कबीर समकालीन रहे है और दोनों ही रामभक्त थे। एक तरफ कबीर अपने दोहो के माध्यम से सामाजिक रूढियों पर कुठाराघात करते थे वहीं तुलसीदास का विरोध रहस्यवादी था। उनका लेखन और चिंतन कबीर के समान गंभीर तो था परंतु स्पष्ट नहीं था। इसलिए तुलसीदास कई स्थानों पर विरोधाभासी प्रतीत होते है परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। वह अत्यंत संवेदनषील व्यक्तित्व के धनी थे। रामचरितमानस उनकी संवेदनाओं की जीवन्त कृति है। इस कृति में उन्होंने केवल रामचरित को ही पहचान नहीं दी बल्कि समाज में नारी दृष्टि, दलित विमर्ष के साथ राजनायक का चरित्र भी प्रस्तुत किया है। एक प्रकार से तुलसीदास एक लोक नायक थे जिन्होंने अपनी लेखनी मात्र से समाज में ऐसी क्रांति का संचार किया जिसने आज भी समाज को प्रभावित किया हुआ है और आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तुलसीदास के संदर्भ में कहते हैं कि लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय की विराट चेष्टा करे।

मानस और नारी विमर्ष

कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।

इस चौपाई में नारी जाति के प्रति किस प्रकार समाज में विडंबना व्याप्त है, इसका दिग्दर्शन किया जा सकता है, जिसमें पार्वती की विदाई के समय उनकी मां मैना कहती हैं कि विधाता ने स्त्री जाति को क्यों पैदा किया। पराधीन को सपने में भी सुख की प्राप्ति नहीं होती है।
तुलसीदास पार्वती की मां मैना के माध्यम से स्त्री जाति के मनोविज्ञान को दर्शाने का सफल प्रयास करते हैं। प्रसंग इस प्रकार है कि पार्वती का विवाह शंकर से होता है जिससे पार्वती तो खुश हैं लेकिन पार्वती की मां मैना बिल्कुल खुश नहीं हैं। तुलसीदास लिखते हैं कि–नारद कर मैं काह बिगारा।
भवन मोर जिन्ह बसत उजारा।

अस उपदेश उमहि जिन्ह दीन्हा।
बौरे बरहि लागि तप कीन्हा।
साचेहुं उनके मोह न माया।
उदासीन धनु धाम न जाया।
पर घर घालक लाज न भीरा।
बांझ कि जान प्रसव कै पीरा।
मां को व्याकुल देख पार्वती कहती हैं कि–
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका।
मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका।

नारद के समझाने पर मैना आनंदित हो जाती हैं और विवाह संपन्न होता है। बिदाई का समय आता है तब फिर मैना दुखित होती हैं और सोचती हैं–कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।

पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।

उपर्युक्त प्रसंग पर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि पार्वती आज के समय में भी स्त्री जाति के ही सामने चुनौती खड़ी कर देती हैं कि अपनी मां से निर्भीकतापूर्वक यह कहना कि मेरा विवाह जिससे भी हुआ है, वह विधाता की देन है और तुम व्यर्थ में कलंक मत लो। आज जो स्त्री–विमर्श चल रहा है, इस विमर्श में तुलसी की यह चौपाई आग में घी का काम कर सकती है।
लोकतत्व की उपस्थिति का अहसास जितनी विपुल मात्रा में सहजता के साथ इस प्रसंग में होता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। तुलसीदास पर यह आक्षेप कुछ लोग लगाते हैं कि वह नारी–विरोधी थेय या कम से कम नारी–समर्थक तो नहीं ही थे। इस आक्षेप की पुष्टि में रामचरित मानस के कुछ उदाहरण वे प्रस्तुत करते हैं। जैसे–

नारि सुभाव सत्य सब कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।।
अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महं मैं मतिमंद अघारी।।।
सहज अपावन नारि।।।।
नारि हानि विशेष क्षति नाहीं।।।
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताडना के अधिकारी।।।

इन चौपाईयों के माध्यम से प्रथमतया तो यही दृष्टिगोचर होता है कि तुलसी नारी समर्थक नहीं हैं। किंतु, रामचरित मानस प्रबंध महाकाव्य है, इसलिए किसी स्वतंत्र एक अर्द्धधाली या चौपाई के माध्यम से यह निष्कर्ष निकालना कि तुलसीदास नारी जाति के प्रति तटस्थ नहीं हैंय यह तुलसीदास का पूर्वाग्रह भाव नहीं है किंतु तुलसी को नारी निंदक कहना य तुलसीदास के प्रति पूर्वाग्रह को दर्शाता है।
प्रसंग काटकर देखने से प्रबंध काव्य में अर्थ–विश्लेषण के क्रम में दोष आ सकता है। लक्ष्मण–शक्ति प्रसंग में स्वयं राम कहते हैं कि–

जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फन करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जो जड़ दैव जियावइ मोही।
जैहऊं अवध कवन मुंह लाई।
नारि हेतु प्रिय बंधु गंवाई।
बरु अपजसु सहतेउ जग माहीं।
नारि हानि विशेष क्षति नाहीं।

यहां पर देखने की बात है कि भाई को शक्ति–बाण लगा हुआ है। संजीवनी अभी नहीं आई है। लक्ष्मण की मृत्यु होने के पूरे आसार राम को तब दिखने लगते हैं जब संजीवनी लाने में हनुमान से थोड़ा विलंब होता है। तब ऐसी स्थिति में जब एक प्रिय भाई मरण–शैय्या पर हो और प्रियतमा पत्नी कैद हो तो जाहिर सी बात है कि हम पहली स्थिति को थोड़ा ज्यादा महत्व देंगेय और क्योंकि लक्ष्मण के बल–बूते पर ही सीता कैद से छूट सकती हैं, तो इस स्थिति में राम उपर्युक्त बात कहते हैं। और राम तो इस प्रसंग में पहले ही अपने जीवन को भी धिक्कारते हैं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं। नारि सुभाव सत्य सब कहहीं। का जहां तक प्रसंग है, यह रावण के द्वारा कहा जाता है, जो खलनायक है। और, रामचरित मानस में नारी के सुझाव की महत्ता तो इतनी है कि वही रावण पत्नी मंदोदरी की बात नहीं मानता है और उसकी मृत्यु होती है। इसी तरह बालि अपनी पत्नी तारा की बात मानने से बिल्कुल इन्कार कर देता है, जिसका परिणाम होता है कि बालि मारा जाता है। बालि जब पूछता है कि राम तुमने मुझे क्यों मारा! तो राम नीतिगत बात बताते हैं–

अनुज वधू भगिनी सुत नारी।
सुन सठ कन्या सम ये चारी।
इनहिं कुदृष्ट बिलोकहिं जोई।
ताहि बधे कछु पाप न होई।

और, अधम ते अधम अधम अति नारी। का जहां तक प्रसंग है, वह है कि शबरी यह बात अपने ईष्ट राम से कहती है। इससे शबरी या नारी जाति की महत्ता बिल्कुल कम नहीं होती है। क्योंकि ईष्ट के सामने अपनी प्रशंसा करना क्या हास्यास्पद नहीं लगता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कह सकते है कि तुलसीदास ने नारी विमर्ष में कोई विरोधाभास नहीं दिखाया है बल्कि तथाकथित बुद्धिजीवियों ने केवल कुछ चौपाइयों का अर्थ ही पढा जबकि मानस एक दो चौपाई का विषय ना होकर संपूर्ण रामप्रसंग और चरित्र का वांड्मय है जिसे पूर्ण समझे बिना कोई टिप्पणी नहीं कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, बाबू गुलाब राय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11, पृ. 115
2. युग पुरूषराम, अक्षय कुमार जैन, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1973, पृ. 153
3. तुलसी का रामराज्य और वर्तमान में उसकी प्रांसगिकता, डॉ. संजीव कुमार, अभिव्यक्ति, 19 मार्च 2012, पृ. 69–71
4. कृतवासी बंगला रामायण और रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन, रमानाथ त्रिपाठी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, 1996, पृ. 75
5. क्रांतिकारी तुलसी, श्री नारायण सिंह, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965, पृ. 44–49
6. गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्तित्व व दर्शन साहित्य, डॉ. रामदत्त भारद्वाज, भारतीय साहित्य मंदिर, 1962, पृ.93
7. गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्ति और दर्शन, डॉ. प्रेमशंकर शुक्ल, मंगला प्रकाशन, कानपुर, 1975, पृ. 83
8. गोस्वामी तुलसीदास : समाज के पथ प्रदर्शक, बद्रीनारायण तिवारी, मानस संगम, कानपुर, 1977, पृ. 72
9. तुलसी, उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, 1976, पृ. 76–77
10. तुलसी पंचशती, डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, योगक्षेम प्रकाशन, बरेली, 2000, पृ. 88
11. तुलसी आधुनिक वातयन से, डॉ. रमेश कुंतल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1967, पृ. 98–100